रुड़की। राजयोगिनी दादी जानकी से ईश्वरीय सौगात लेते हुए लेखक श्रीगोपाल नारसन।

लोधी रोड-दिल्ली। गेल इंडिया लि. के कर्मियों को एकदिवसीय संगोष्ठी कराने के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.पीयूष एवं प्रतिभागी।

नवी मुंबई। बिहार के गवर्नर पद्मश्री डॉ. डी.वाय.पाटिल एवं महाराष्ट्र के ऐक्साइज़ मिनिस्टर गणेश नायक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शीला।

मोतिहारी। 32 माह की कन्या शानवी नवरात्री के अवसर पर माँ दुर्गा के चैतन्य रूप में।

पोखरा। विन्धवासिनी धार्मिक सेवा समिति द्वारा सम्मानित किए जाने के बाद समूह चित्र में समिति अध्यक्ष गणेश बहादुर, ब्र.कु.शोभा, ब्र.कु.शैलेष तथा अन्य।

गुजरात। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा के दौरान ब्र.कु.ज्योति, ब्र.कु.अरुणा, ब्र.कु.हर्षा तथा ब्र.कु.कोमल।

मैंगलोर: द फ्यूचर ऑफ पावर कार्यक्रम के पश्चात समूह चित्र में - पी.पी.उपाध्याय, डॉ.वसंत कुमार पेरला, डॉ.रविन्द्रनाथ शानबाग, दीनक रमानी, अम्बाभवानी कुमार, आशीष बलाल, वी.यू.जॉर्ज, राजवर्मा बलाल, कैप्टन गणेश कार्निक, नवीनचंद्र सुवर्न, अरूर किशोर राव, एंथनी फिलिप्स, सुधीर घाटे, कार्तिक कश्यप भट्ट, डॉ. बसवराज राजऋषि, डी.बी.मेहता, डॉ.यू.वी.शिनाय, सुलीबेले चक्रवर्ती, मोहम्मद नज़ीर, पी.पी.हेगड़े, डॉ.यू.पी.शिवानन्दा एवं डॉ.पी.वी.भंडारी। मौरीन चेन, ऐन्न बोनिन, चन्द्रकला नन्दावर, हिल्डा रय्यपन, सारा अबुबक्र, ब्र.कु.विश्वेश्वरी, निज़ार जुमा, जीज़ेल मेहता, लक्ष्मी कुमारन, ब्र.कु.निर्मला, एस्थर वाइत्समैन, विद्या दिनकर, हेलन सेयर्स।

सुखद पल परमात्म मिलन के...

-ब.कु.श्याम

इस ईश्वरीय जीवन की वे घड़ियाँ स्मरणीय होती हैं जब आत्मा अपने सच्चे प्रियतम परमपिता परमात्मा के पास बहुत काल तक निरंतर निवास करती है। कभी-कभी छोटी बातों में उलझकर मन इस अनुपम रस से वंचित रह जाता है परन्तु मनुष्य के ऊँचे संकल्प व स्वयं से रूह-रिहान उसे सहज ही इसका अनुभव करा देती है। यहाँ पर ऐसे ही अनुभव को प्रस्तुत किया गया है। इस तरह के स्वचिंतन से आत्मा सहज ही निरंतर परमात्मा की समीपता का रस ग्रहण कर सकती है।

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण, श्रेष्ठ ऋषियों की तपस्या के पावन तरंगों से आच्छादित, एकान्त स्थित पर्वत शिखाओं पर पहुँचते ही मन में दिव्य तरंगें होने लगीं और मन प्रभु मिलन के ईश्वरीय आनन्द में खो गया।

आबू की मन भावन पहाड़ियों से आवाज़ गूंज उठी - हे योगी... जिसने तुम्हें नव जीवन का दान दिया... जिसने तुम डूबतों को पार लगाया उसे तुम क्यों भूल जाते हो?

धीमी गति से मन में प्रवाह उठा

जिसने तुम्हें हंसना सिखाया, तुम्हारे दुखों के आँसू पोंछे और तुम्हें कहा कि तुम मेरे हो, उसे तुम कैसे भूल जाते हो?

हे प्राणी... जिसने तुम्हारी तूफान ग्रस्त नैया को किनारे लगाया... जिसने तुम्हें माया के भीषण प्रकोप से बचाया... जिसने तुम्हें माँ बनकर अपनी शीतल गोद में बिठाया.. उसे भूलकर तुम किसे याद करते हो?

और इन विचारों से मन पूर्णतया शान्त हो गया। कुछ क्षण के लिए मानो आत्मा परमात्मा में समा गई।

पुन: सुखदाई संकल्प मन में प्रवाहित होने लगे

हे मानव... जिससे मिलने का तुम्हें कई जन्मों से इंतज़ार था, जिससे क्षणिक बातें करने के लिए तुम नयन बिछाए रहते थे, वह इंतज़ार तो तुम्हारा पूर्ण हो गया... तुम कहते थे कि बस दिल में एक ही इच्छा है कि सदा तुम्हारे साथ ही रहूँ... तब तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं था, अब तुझे सम्पूर्ण ज्ञान है, तो क्यों नहीं सदा ही तू उसके साथ रहता.. यदि तू सबकुछ जानकर भी उसके साथ नहीं रहेगा तो भला और कौन रहेगा।

और ऐसा ही प्रतिभासित होने लगा कि मैं अपने उस प्यारे प्रियतम के पास ही बैठा हूँ... आह। कितना आनन्द है इस मिलन में जिसकी गाथाओं से शास्त्र भरे हुए हैं।

फिर ईश्वरीय महावाक्य कानों में गूँजने लगे

"बच्चे, बाप तुम्हारा सदा का साथी है, वह सदा ही साथ निभा रहा है।" तो दिल कहने लगा, जो मेरा साथ दे रहा है मैं क्यों न सदा उसके साथ रहूँ... उसने मेरे लिए सारे खज़ाने खोल दिए हैं क्यों न मैं उससे सबकुछ प्राप्त कर लूँ... जो बाप मेरा रोज़-रोज़ श्रृंगार कर रहा है क्यों न मैं उसकी छवि नयनों में समा लूँ... यदि सारे खज़ाने हाने पर भी मैं अतृप्त रह गया तो चारों युगों में भला तृप्ति कब होगी... यदि भगवान को पाकर भी संतोष न हुआ तो कब होगा...

बच्चे, भक्ति में तुमने कितना कहा था कि हे प्रभु! जब कभी आप इस धरा पर आओ तो कृपया अपने आने की खबर हमें देना। और हो सके तो हमें स्वीकार कर लेना। अब देखो, उसने हमें स्वीकार भी कर लिया और कहा कि "तुम मेरे नयनों के नूर हो।" मन खुशियों मे नाच उठा, ओह... भगवान मेरा हो गया, और मन से आवाज़ निकली - वाह बाबा, हम तो सोचते थे, हे भगवन आप तो ऐसे होंगे, वैसे होंगे, पता नहीं कैसे होंगे.. परन्तु तुम तो हमारे ही निकले...

पुन: कुछ क्षण के लिए मन आनन्द में खो गया। स्थान व समय की भी अविद्या हो गई। मन उस रस को चखते-चखते तल्लीन अवस्था में पहुँच गया।

कुछ ही क्षण बाद अति प्रेरणा भरे संकल्प मन में पुन: जागृत हुए

हे राही! क्या तू अपना वायदा भूल गया - तूने कहा था कि तुम आओगे, हम तुम्हारे ही साथ रहेंगे तो क्यों नहीं तू अपने उस परम प्रियतम शिव बाबा की याद में मग्न हो जाता... जब तुझे पता है कि इस याद से तू अपनी मंज़िल पर पहुँचेगा... इसी से तेरे कंटक पथ की यात्राएं सुखद होंगी... इसी से तू सूर्य समान बनकर समस्त विश्व को प्रकाशित करेगा - इसी से तू कोटि-कोटि आत्माओं का विघ्न विनाशक बनेगा... हे प्राणी - तू अपने मन में क्यों नहीं अपने उस प्राणनाथ को समा लेता, जिसे मिलने की तुझे हज़ारों वर्ष की तड़पन थी और जो अनेक जन्मों की तपस्या के बाद तुझे मिला है... तू भला पलभर भी उससे जुदा क्यों होता है... जबकि तुझे पता है कि उससे दूर होते ही संसार उलझनों भरा है, उसे भूलते ही चहुँ ओर माया का जंजाल है, उससे किनारा करते ही जीवन दुखमय है। क्यों नहीं तू प्रतिपल उससे ही बातें करता, जिससे क्षण भर बातें करना ही तू सर्वोच्च भाग्य समझता था।

और फिर मन में मानो कोई कह रहा हो

हे योगी, तुम याद करो। तुम्हारा परम मित्र तुमसे कितनी मित्रता निभा रहा है... मित्र होने के नाते जो भी अधिक से अधिक वह तुम्हारे लिए कर सकता है कर रहा है... तो क्या तुम भी उसके मित्र होकर वह सबकुछ कर रहे हो जो कर सकते हो? क्या तुम उसकी दोस्ती का सम्पूर्ण लाभ उठा रहे हो?

और मन कह उठा

हे मेरे परमपिता शिव बाबा, तुम्हारी दोस्ती पर मुझे गर्व है... मैं इस दोस्ती का ऋण अवश्य चुकाउँगा... मैं तुम्हारी आशाओं का दीपक हूँ, जग को आलोकित करूंगा... मुझे पूर्ण एहसास है कि तुम मुझे प्यार करते हो... मुझे पल्कों में छुपाए रखते हो... मुझे बल देते हो... मेरे प्रत्येक श्रेष्ठ संकल्प को पूरा करते हो... मैं भी आपका प्रत्येक संकल्प पूरा करूँगा, तुम्हें जग में प्रत्यक्ष करूँगा।

प्राण प्यारे शिव बाबा

कभी वे दिन थे, जब हम तुम्हारी खोज में भटकते थे, सत्य को जानने के लिए लालायित रहते थे... और अब... अब वे दिन हैं जब हम सदा ही तुम्हारे साथ रहते हैं... तुम्हारी प्रत्येक दिव्य लीला को देखते हैं... तुम्हारी ही छत्रछाया में रहते हैं, तुम्हारे ही प्यार में पलते हैं।

और इस तरह, बहुत समय प्रभु-मिलन के अलौकिक आनन्द में बीत गया। मन पूरी तरह आनन्दित हो चुका था, मानो उसे वह सबकुछ मिल गया हो, जिसकी उसे चाह थी। और उसके बाद यही प्रवाह कई दिनों तक मन को उस परम प्रियतम की अलौकिक छवि से लुभाता रहा।